अग्नि गाथा के नायक

शहीद रामनारायण आज़ाद

भूपेन्द्र प्रताप सिंह

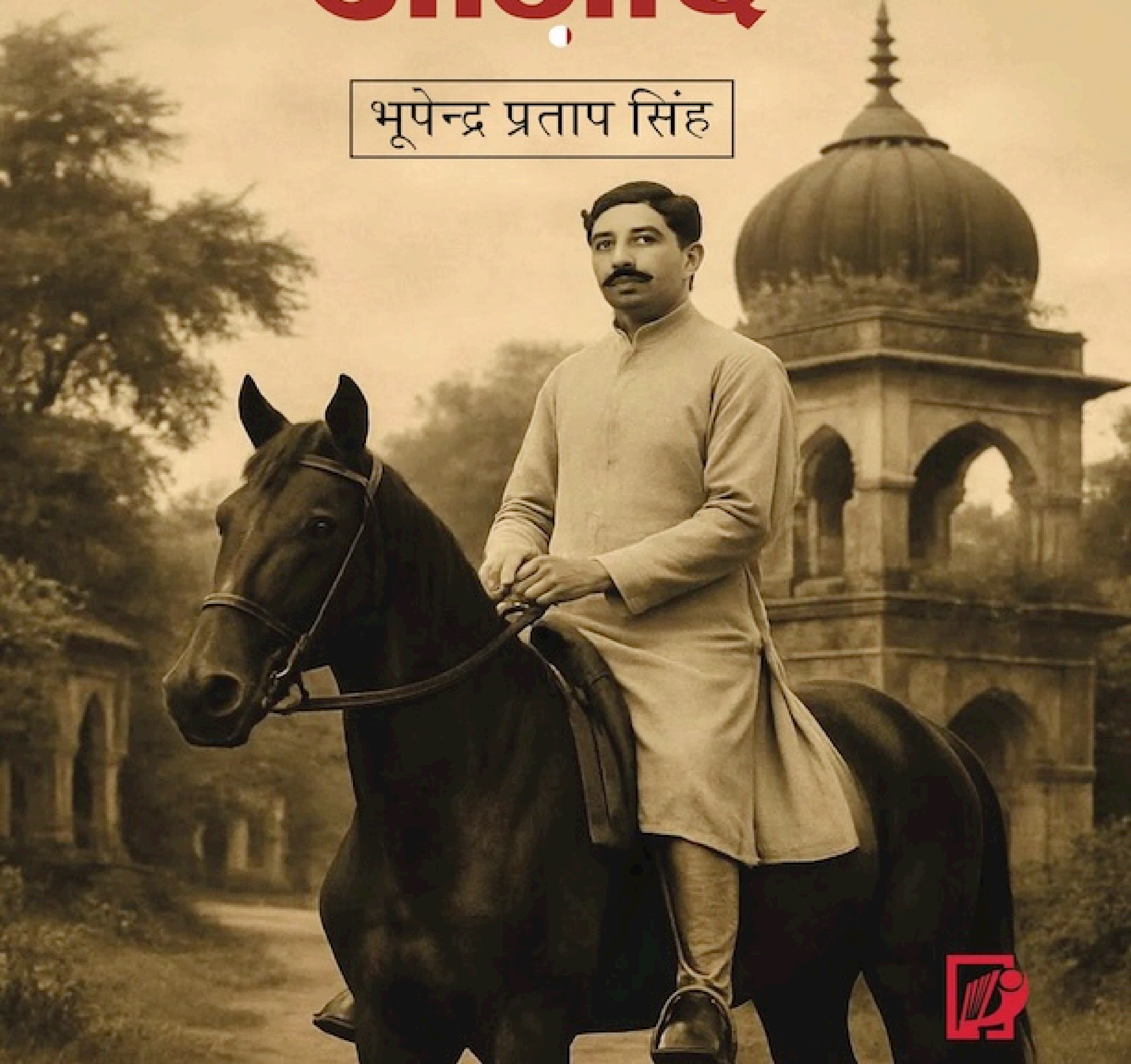

अग्निगाथा के नायक

शहीद रामनारायण आजाद

भूपेन्द्र प्रताप सिंह

प्रवासी प्रेम पब्लिशिंग, भारत

ISBN 978-81-989462-3-2

पहला संस्करण : 2026 (शक 1947)

© भूपेन्द्र प्रताप सिंह

Agnigatha Ke Nayak Shahid Ramnarayan Azad (Hindi Original)

पूज्य पिताजी

स्व. दिनेशपाल सिंह

एवं

चाचाजी

स्व. गिरीश चंद्र दुबे

की मित्रता को

समर्पित

अनुक्रम

भूमिका **5**

आमुख **8**

1. फर्रुखाबाद के आजाद 17

2. बालपन एवं प्रारंभिक शिक्षा 24

3. प्रथम विश्व युद्ध की आहट और आसपास 29

4. फर्रुखाबाद कोतवाली में फायरिंग और पुलिसवाले की हत्या 34

5. कांग्रेस अधिवेशन और कलेक्टर 37

6. रामप्रसाद बिस्मिल और रामनारायण आजाद 40

7. शाह जी की विश्रांत बन गई राजदार 44

8. सचीन्द्र नाथ सान्याल और विश्रांत घाट 46

सचीन्द्र नाथ सान्याल 47

9. रामनारायण आजाद और जयचंद्र विद्यालंकार 49

10. चंद्रशेखर आजाद का फर्रुखाबाद आगमन 52

11. राजा तिर्वा के यहाँ डकैती और स्वराज कुटीर 59

12. महात्मा गांधी और पं. जवाहर लाल नेहरू का फर्रुखाबाद आगमन 61

13. नमक आंदोलन और गिरफ्तारी 63

15. फर्रुखाबाद की सेंट्रल जेल और मणीन्द्र नाथ बनर्जी का बलिदान 70

16. रामनारायण आजाद और सुभाष चंद्र बोस 73

17. आजाद की पार्टियाँ 81

18. आजाद अक्सर गुनगुनाते थे 105

परिशिष्ट **107**

क्रांतिवीर पं. नित्यानन्द 107

बादामो देवी (स्वतंत्रता संग्राम सेनानी) 111

ज्वाला प्रसाद 113

आजाद के परिवार का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान 115

संदर्भ 117

आजाद के पौत्र पुनीत दुबे उर्फ बॉबी दुबे से साक्षात्कार 120

भूमिका

पंडित रामनारायण आजाद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक ऐसे सिपाही थे, जो समकालीन स्वतंत्रता सेनानियों के साथ महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में न सिर्फ फर्रुखाबाद अर्थात् प्राचीन पांचाल क्षेत्र के अपितु संपूर्ण भारतवर्ष के क्रांतिकारियों एवं गांधीवादी स्वतंत्रता सेनानियों के निरन्तर संपर्क में रह कर अपने कार्यकलापों को अंजाम देते रहे।

अपने बाल्यकाल में जब मैं गांधी जी, पं. जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, खान अब्दुल गफ्फार खाँ (सीमांत गांधी), लोकमान्य तिलक, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, लाला लाजपत राय आदि को जान-समझ रहा था तभी भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, राजगुरु, अशफाक उल्ला खाँ, रोशन सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, महावीर सिंह, पं. रामनारायण आजाद आदि के कार्यकलाप पढ़ कर मन रोमांच से भर उठता था। समय के साथ बुद्धि विकसित हुई, तो स्वतंत्रता संग्राम में गांधी जी या उनके अनुयायियों और क्रांतिकारियों की चर्चाएँ अलग-अलग सुन कर मन क्लांत हो उठता था कि देश आजाद हुआ तो किसका योगदान अधिक था और किसका कम ? क्योंकि बाल मन की अमिट रेखाओं में अंग्रेजों के इस देश से जाने के पीछे सभी के संघर्ष, त्याग और बलिदान को बराबर ही मानता रहा।

अपने पिताजी श्री दिनेश पाल सिंह की तार्किक बुद्धि का सदैव मुझ पर प्रभाव रहा और उनके मित्र और सहपाठी पंडित गिरीश चंद्र दुबे जिन्हें हम 'गिरीश चाचा' के नाम से

बुलाते थे और उनकी बड़ी बहन कमला बुआ, जिनका बंगला हमारे घर के पास ही था के मुख से फर्रुखाबाद के भी कुछ स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के विषय में अकसर सुनता रहा।

गणित और विज्ञान की पढ़ाई ने हिंदी और इतिहास को मात्र एक विषय बना कर रख दिया और युवावस्था में भविष्य की चिंता ने रोजगार की तलाश तक सीमित कर दिया; किंतु मन में एक जिज्ञासा सदैव बलवती रही कि प्राचीन कान्यकुब्ज और पांचाल क्षेत्र की पवित्र और क्रांतिधर्मा भूमि का स्वतंत्रता संग्राम में क्या योगदान रहा ?

सांख्य दर्शन के प्रणेता कपिल ऋषि, ब्रह्मर्षि विश्वामित्र, याज्ञसेनी द्रोपदी और धृष्टधुम्न को जन्म देने वाली भूमि, जो पाण्डवों के सेनापति बन अठारह दिन तक पाण्डव सेना का नेतृत्व करते रहे, जहाँ स्वयं बुद्ध स्वर्ग से पधार कर उपदेश दे, जहाँ विमलनाथ जी का जन्म हुआ हो, वह भूमि स्वतंत्रता संग्राम में कोई सपूत पैदा करने से वंचित थी क्या ? स्वामी विराजानन्द ने काम्पिल्य के वनों में स्वतंत्रता संग्राम के आवाहन में राजाओं का पहला अधिवेशन बुलाया तो स्वामी दयानन्द सरस्वती भी यहाँ इसी हेतु पधारे, अर्थात् कुछ न कुछ था, जो या तो विस्मृत था या रेखांकित होने से रह गया था।

पिताजी से बचपन की कड़ियों को जोड़ने का प्रयास किया तो अनेक नाम सामने आए और अनेक कहानियाँ भी, इन सब में जो नाम आए उनमें जो सबसे बेखौफ और बहादुर छवि मन मस्तिष्क में अंकित हुई, वह थी पंडित रामनारायण आजाद की। आजादी का अमृत महोत्सव पूरे भारतवर्ष के लिए वह अवसर बना जब पिछली पीढ़ी आने वाली पीढ़ी को दास्तानों की मशाल सौंपती दिखी। गाँव गाँव नगर-नगर उत्साह और उमंग ने मानो

देशभक्ति और देश के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वालों के विषय में जानकारी के नये अध्याय खोल दिए।

वयोवृद्ध पंडित गिरीश चंद्र दुबे जो कि पंडित रामनारायण आजाद के पुत्र थे और उनकी पत्नी श्रीमती शशिप्रभा दुबे से जब मिला तो उनकी स्मृतियों की परतें खुलने लगीं। साथ में होते थे पिताजी श्री दिनेश पाल सिंह और गिरीश चाचा के पुत्र पुनीत दुबे जो बॉबी दुबे के नाम से देशभर के क्रांतिकारी वंशजों के मध्य लोकप्रिय हैं। फर्रुखाबाद के आस पास के जनपदों के फर्रुखाबाद से क्रांतिकारी सम्बन्धों की जानकारी मिली मैनपुरी से स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं विधायक रहे मा. लल्लू सिंह चौहान से जो शहीद स्मारक समिति के माध्यम से राष्ट्रभक्तों को अपनी अंतिम श्वाँस तक नमन करते रहे।

श्री सुरेन्द्र सिंह सोमवंशी, डॉ. राजकुमार सिंह, डॉ. रजनी सरीन जी ने पंडित रामनारायण आजाद की जीवनी को इतिहास के एक स्वर्णिम अध्याय के रूप में लिपिबद्ध करने के लिए प्रेरित किया। इसके साथ ही अपनी माताजी श्रीमती कुसुम सिंह और धर्मपत्नी रश्मि सिंह के सहयोग को रेखांकित करते हुए उपरोक्त सभी का आभार व्यक्त करता हूँ।

भूपेन्द्र कुमार सिंह